मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -1 | अंक - 3 | जयपुर | नवम्बर - जनवरी-2013 | पृष्ठ संख्या - 6

निदेशक की कलम से...

आचार्य (डॉ.) इन्द्र कृष्ण भट्ट

निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर

सभी विद्यार्थीगण एवं संस्थान सदस्यों को वर्ष 2013 की हार्दिक शुभकामनायें एवं साथ ही 64 वे गंणतंत्र दिवस की भी बहुत बहुत बधाई। नये वर्ष में हमें यह नयी सोच विकसित करनी चाहिये कि हमें पुरानी समस्याओं के नये हल निकालने है न कि पुरानी खराब व्यवस्था के नये कारण खोजने की दिशामें काम करना है। समाज में जिस भी क्षेत्र में परिवर्तन की जरूरत है, उसके समाधान के लिये हमें अपने अंदर झांकना होगा, परिवर्तन की शुरूआत वहीं से करनी होगी, उस गलत सोच व नाकारा व्यवहार को बदलना होगा। अपनी समस्याओं या विकास के रास्ते में आने वाली अड़चनों को दूर करने की जिम्मेदारी हमारी है क्योंकि इन समस्याओं के जिम्मेदार हम ही हैं बाहर का कोई व्यक्ति, दल या समाज इसमें कोई मदद करने के लिय सक्षम नहीं है। चूँकि यह हमारी संस्कृति है इसलिये हम ही बेहतर जानते हैं कि समाधान कि दिशा क्या होगी और उसका असर होगा।

हम सभी जब अपनी जिम्मेदारियों को ठीक तरह से निर्वहन करने लगेंगे, तब ही हम देश को प्रगति के पथ पर आगे ले जा पायेंगे, यही देश के प्रति सच्ची सेवा होगी।

किसी भी देश की प्रगति वहां के शैक्षणिक वर्ग के प्रतिशत एवं शैक्षिणिक स्तर पर निर्भर करती है। अतः विद्यार्थियों को शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिये, यही उनका कर्त्तव्य है और भविष्य में यही शिक्षित विद्यार्थी एक आत्मनिर्भर, शिक्षित एवं सभ्य समाज का निर्माण करेंगे।

ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि आने वाले कुछ दशकों में भारत एक महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित होगा, अंदाजा सटीक हो सकता है पर इस बात पर कोई दो राय नहीं कि हमारे पास इसके पीछे जो वजह है वह एक ठोस व शाश्वत सत्य है, और वह है हमारी संस्कृति तथा शास्त्र सम्मत एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित जीवन पद्धति, अतः आपसे उम्मीद है कि आप इसे अपने जीवन का आधार बनाते हुये अपनी जिम्मेदारियाँ निभायेंगे।

जय हिन्द!

- आचार्य (डॉ.) इन्द्र कृष्ण भट्ट

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी

युवकों को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रखें।

मदन मोहन मालवीय

एक अनमोल शख्सियत

प्रातः स्मरणीय भारतभूषण महामना पं. श्री मदन मोहन मालवीय जी यद्यपि इस समय अपने पंचभौतिक शरीर द्वारा विद्यमान नहीं है, तथापि उनकी यशः काया अब भी पूर्ण रूप से विद्यमान है जो समय- समय पर हमारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती रहती है। महामना अपनी जिन असंख्य कृतियों के द्वारा आज भी इस संसार में जीवित है, उनमें एक है काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना व उसका उद्देश्य तथा महामना जी की दुर्लभ चारित्रिक विशेषतायें।

महामना पं. मालवीय जी के कुछ संस्मरण

दुनिया में ऐसे व्यक्तित्व से संपन्न महापुरुष बहुत कम होते हैं जिनकी महत्ता, उदारता, प्रभाव और स्वभाव की विनम्रता से संपूर्ण वातावरण सुगंधित होता हो, वर्तमान शताब्दी में इस तरह के व्यक्तित्व से सम्पन्न केवल महामना मालवीय जी ही थे। किसी भी क्षेत्र की बात करें धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक या शैक्षणिक,

उनके गुणों के योगदान का अंत नहीं है।

पूज्य पं. मदन मोहन मालवीय जी भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतिनिधि थे। वे भगवान के भक्त व धर्म निष्ठ थे। उनके लिये भगवान की भक्ति का अर्थ मानव मात्र की सेवा करना था। इस तथ्य को उन्होंने भली प्रकार अंगीकार कर लिया था कि भगवान का सबसे सबल, यथार्थ और सुलभ रूप मानव है।

शेष पृष्ठ 3 पर...

भावनात्मक एकता और समरसता की प्रतीक राजभाषा- हिन्दी

हमारा राष्ट्र एक बहुभाषी राष्ट्र है। हमारे देश की राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी है। भारत में हिन्दी ना केवल संघ के सरकारी कार्यों के निष्पादन के निस्तारण की भाषा है अपितु हिन्दी आम भारतीय जन की सम्पर्क भाषा है। राजभाषा के लिये राष्ट्रीय अस्मिता को व्यापक अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली इस हिन्दी भाषा को इसी लिये राजभाषा के रूप में मान्यता दी गयी है। भारत के हित को अभिव्यक्त करने वाले भारतीयों का यह अभिमत है कि एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिये हिन्दी भाषा विभिन्नता में एकता बनाए रखती है। भारत के इतिहास में प्राचीन काल में संस्कृत, मध्य काल में फारसी व ब्रिटिश काल में अंग्रेजी प्रचलन में थी किन्तु हिन्दी अपनी व्यापकता और समरसता का परिचय देती हुई सभी के साथ मिलकर चलती रही। इस प्रकार हिन्दी का प्रभाव कभी कम नहीं रहा। संभवतः इसी कारण हिन्दी को आसानी से राजभाषा का दर्जा मिल गया। इतिहास के पृष्ठों में यह साक्ष्य हैं कि स्वतंन्त्रता संग्राम में हिन्दी ने देशवासियों को एकता और अखंडता के रूप में जोड़ने की महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

राष्ट्र में भावनात्मक एकता स्थापित करने तथा उसके उत्थान व विकास में भाषा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान होता है।

शेष पृष्ठ 2 पर...

सम्पादकीय...

वर्ष 2013 के शुरूआत में आप सभी प्रबुद्ध पाठकों से जुड़ने का जो सुअवसर मिला है, उसके लिये प्रभु का अनकानेक धन्यवाद। ईश्वर से विनती है कि यह वर्ष आपके जीवन में सुख, शांति व समृद्धि लेकर आये और हम सभी पिछले वर्ष की तुलना में दूसरों के प्रति ज्यादा सहृदय सहनशील व प्रेममय बने तथा सदैवे हरि की याद में रहें।

इन सभी ईच्छाओं की पूर्ति हेतु हमें अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों का संवहन करते हुये, बदले हुये नये परिवेश में तालमेल कायम करना होगा। जैसा कि हम देख रहे हैं बदलाव जीवन के हर क्षेत्र में तेजी से आ रहे हैं, पर अर्थपूर्ण जीवन जीने के लिये हमें सिर्फ उन्हीं परिवर्तनों को आत्मसात करना होगा जो हमारी पुरातन भारतीय संस्कृति के मौलिक स्वरुप से छेड़छाड़ न करे, जो बदलाव, जो चिंतन हमारी जड़ों को खोखला करने का कार्य करता हो, उसे जड़ सहित उखाड़ फेंके, कदापि न स्वीकारे, पर दूसरी तरफ आज की दुनिया को भी समझे जो कि विज्ञान और उसकी औलाद, 'तकनीक' की दुनिया है, अगर हम इसके साथ नहीं जुडेंगे तो अपने देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं कर पायेंगे और इस तरह हमारी आत्मनिर्भरता और आजादी को खतरा हो सकता है और अंततः हमारी खुशहाली पर भी इसका अवश्यंभावी असर पड़ेगा।

आज हम भारतीय संस्कृति का जो रुप देख रहें है, वह परिवर्तित रूप है, जो कुछ हद तक विकृत कहा जा सकता है। जिस प्राचीन भारतीय संस्कृति के साये में हम पले व पनपे हैं, जिसका प्रभाव हमारी रग-रग में हैं, वह तो खरा सोना है और वही हमारा आधार है। कमियाँ उसमें नहीं, उसके परिवर्तित रूप में हैं, हमें इसी परिवर्तन को समय के प्रवाह के मद्देनजर सही दिशा में ले जाना होगा।

आइये! हम नव वर्ष के शुरूआत में यह प्रण लें कि हम जमीन से जुड़ी आधुनिक एवं संतुलित सोच को अपनायेंगे और इसके लिये जो भी संकल्प लेंगे उसमें दृढ़ता होगी और उसे सकारात्मक दिशा में ले जाने के लिये अनवरत प्रयत्न करेंगे। इस इन शुभ संकल्पों की पूर्णाहुति एक उम्दा इंसान व बेहतरीन तथा जिम्मेदार नागरिक के रूप में होगी। इन्हीं शुभकामनाओं व आदर सहित,

सस्नेह,

भवदीया

डॉ. ज्योति जोशी,

सम्पादक एवं सह-आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

9413971604, 0141-2713350, jojo_jaipur@yahoo.com

एम.एन.आई.टी. गतिविधियाँ

पं. मालवीय जयंती (25 दिसम्बर) के अवसर पर चैयरमेन, निदेशक व अन्य संस्था सदस्य माल्यार्पण करते हुये।

संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित रचनाकारों की संगोष्ठी (यंगिस्तान रिटर्नस)

1982 व 1983 बैच का रजत जयंती वर्षगांठ के अवसर पर निदेशक का उद्बोधन व सम्मानित सदस्य

तकनीकी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में विभागाध्यक्ष श्रीमती नेनी त्रिपाठी द्वारा उद्बोधन।

संस्थान में वार्षिक खेल प्रतियोगिता - 2013 में भाग लेते प्रतियोगी।

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या
निदेशक की कलम से...	1
महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी	1
सम्पादकीय	1
भावनात्मक एकता और समरसता	1
भूमंडलीकरण के दौर में प्रिंट मीडिया	2
माँ	2
लख चौरासी	2
सपनों के जूगनु	2
मौन की आवाज	3
सफलता का रहस्य	3
शिक्षित समाज का आईना	4
भाव कुभाव	4
महिला सशक्तिकरण में परिवार	4
प्रायश्चित	4
आत्मा व शरीर	4
मच्चितः सर्वदुर्गाणि ...	5
सवाल हमारे जवाब उसके	5
तलाश	5
बाईबिल का संदेश	6
लोक आयुक्त :.....	6
फोटोग्राफी-भावाभिव्यक्ति...	6

संसार में बढ़ते हुये तनावों को आत्मबल से ही रोका जा सकता है।

पृष्ठ 1 का शेष...

भावनात्मक एकता और समरसता...

भावनात्मक एकता और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति तभी संभव हैजब सम्पूर्ण राष्ट्र के भावों के आदान प्रदान में कोई कठिनाई ना हो अर्थात् आदान प्रदान का कोई सरल माध्यम हो। ये कार्य देशी भाषा ही संभव कर दिखाती है।

संविधान सभा द्वारा १४ सितम्बर १९४९ को संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिली थी। संविधान- सभा ने हिन्दी की लोकप्रियता, वैज्ञानिकता, सफलता, व्यापकता और बोधगम्यता को मद्देनजर रख इसे देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। संघ की राजभाषा नीति के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है।

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची अनुच्छेद ३४४ (१) और अनुच्छेद ३५१ में निम्न भारतीय भाषाओं का वर्णन है।

१. असमिया	२. बंगला
३. गुजराती	४. हिन्दी
५. कन्नड़	६. काश्मीरी
७. तमिल	८. मलयालम
९. तेलुगू	१०. मराठी
११. उर्दू	१२. उड़िया
१३. पंजाबी	१४. संस्कृत
१५. सिन्धी	१६. कोंकणी
१७. मणिपुरी	१८. नेपाली
१९. डोंगरी	२०. सन्थाली
२१. बोडो	२२. मैथिली

राजभाषा के सन्दर्भ में सरकारी स्तर पर राजभाषा अधिनियम १९६३, राजभाषा संकल्प १९६८ और राजभाषा नियम १९७६ यथा संशोधित १९८७ प्रभावी बनाये गये है जिसमें राजभाषा के रूप में हिन्दी के विकास कार्यों को क्रियान्वित करने के आदेश है। सरकार ने उपर्युक्त सभी आदेशों के क्रियान्वयन के लिये विभिन्न संस्थानों की स्थापना की जैसे केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, राजभाषा विभाग, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरों, केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान आदि का विधान किया गया है। ये सभी प्रयास राजभाषा के उत्थान, प्रचार एवं प्रयास की दिशा में कार्यरत है।

हर वर्ष राजभाषा के विकास के लिये एक वार्षिक कार्यक्रम (कैलेण्डर) निर्धारित किया जाता है। इस कैलेण्डर में नीतिगत लक्ष्यों का निर्धारण और उनको पूरा करने के लिये सकारात्मक और सक्रिय प्रयास करने का केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों के सचिवों/ अध्यक्षों आदि से अनुरोध किया जाता है। संविधान के अनुच्छेद ३५१में यह प्रावधान है कि वह राजभाषा का प्रचार व प्रसार बढ़ायें।

हिन्दी को देश की राजभाषा बने बासठ वर्ष हो गये हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार और हिन्दी में प्रशिक्षण देने के लिये भारत सरकार द्वारा निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। हिन्दी की कार्यशालाएं और अखिल भारतीय संगोष्ठियाँ भी सरकारी स्तर पर समय-समय पर आयोजित की जाती हैं। भारत जैसे मिश्रित संस्कृति वाले विशाल देश की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हिन्दी बन सके इसलिये यह आवश्यक है कि सरकारी प्रयासों को प्रभावी बनाने में सभी प्रयासरत रहें।

हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी एक आम जन की भाषा बने इसके लिये सरकारी प्रयासों के साथ हमें भी सक्रिय योगदान देना होगा। हमें इस दिशा में सदैव सचेत रहना होगा कि हिन्दुस्तानी भाषा में व्यक्त स्वरूप, शैली, अभिव्यक्ति और संस्कार में कोई व्यवधान ना हो इसलिये हमारी नैतिक जिम्मेदारी यह है कि हम इसके मूल स्वरूप में अधिक से अधिक इसका प्रयोग करें। इसे सम्पर्क भाषा बना कर सम्मान करे। अपनी भाषा की उन्नति में सहायक बनना, उसके उपयोग, प्रचलन और प्रभावी बनाना हमें अपना कर्त्तव्य समझना चाहिये। भाषा की उन्नति में ही समग्र संस्कृति और संस्कार की उन्नति निहित होती है। इसके प्रति कर्त्तव्यपरायणता ही सच्ची देश भक्ति समरूप है। भावों की अभिव्यक्ति और संप्रेषण हिन्दी के माध्यम से हमारे पास ही है यदि आवश्कता है तो उससे जुड़ने की इसलिये आईये अपनी भाषा से सदैव जुड़े रहने के प्रति संकल्पबद्ध हों।

- अंशु सक्सैना
स्थापना विभाग, नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग
मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

माँ

मां आप पर गुस्सा करता हूं,
जब कुछ पूछती हो,
भूल जाता हूं कितनी ही बार
मेरे बेतुके प्रश्नों का,
आप प्यार से जवाब देती थीं।
मैनें मना किया,
जब आपने कहा सिर दबाने को,
भूल गया था कितनी ही रातें आपने
मेरे लिए जागते हुए गुजारी है।
खाना अच्छा ना लगने पर लड़ता हूँ,
आप भी तो भूखी रहती थी,
मुझे खिलाने के लिए,
भूल जाता हूं,
आप ही तो हैं सबसे अच्छी दोस्त
आप ही ने तो सम्भाला था,
जब मैं निराश हो टूट जाता था मन से,
और मैं आप को अकेला छोड़ देता हूं
जब आप दुखी होती हैं।
आज भी याद है मुझे,
जब पूरी रात सोई नहीं थी,
मेरे सिर से पट्टियां बदल रही थी,
और मैं सो जाया करता हूं,
तकलीफ में छोड़कर आपको,
माँ, आप से ही तो मैं हूं,
आपके आँचल की ओट लेकर,
मुश्किलों में भी चल सकता हूं
बिल्कुल निडर, बेफिक्र।

- पंकज उदय
तृतीय वर्ष, जनपद अभियांत्रिकी

भूमंडलीकरण के दौर में प्रिंट मीडिया

'मास मीडिया' शब्द से तात्पर्य जनसंचार माध्यमों जैसे समाचारपत्रों, रेडियों, टेलीविजन, सिनेमा, विज्ञापन, कम्प्यूटर, इंटरनेट इत्यादि से है। भारत दुनिया में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और अब सूचना व क्रान्ति का यह केन्द्र बन चुका है, इसलिए विकास में मास मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए आज विभिन्न 'मास मीडिया' के भविष्य पर अध्ययन व नित नये प्रयोग हो रहे हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी में 'वेब युग' को प्राथमिकता देने का कार्य 'मास मीडिया' ही कर रहा है। भारत जैसे विकासशील देशों में 'मास मीडिया' के सामाजिक प्रभावों पर भी अनुसंधान जरूरी है।

टीवी चैनलों एवं अखबारों में गलत तरीके से खबरें देने की प्रवृत्ति खतरनाक है। मास मीडिया का हर किसी के जीवन में बहुत महत्व है। यह उनकी समस्याओं को हल करने का प्रयास करता है तथा लोगों को महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। इस प्रकार यह सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। डेनिस मैकवील ने इस संदर्भ में कहा है कि 'मीडिया समाज परिवर्तन की यंत्रशक्ति है।' समाज का दर्पण है। जबकि रश्मि बोहरा कहती हैं कि अब वर्तमान में वेब के निरंतर बढ़ते हुये प्रभाव का सच स्वीकारना ही होगा और यह 'वर्तमान' मीडिया द्वारा निर्मित है।

बिखरे हुए वर्तमान का मुकम्मल 'आज' बनाने की जिम्मेदारी मीडिया को बेशक किसी ने नही दी हो पर मीडिया अपने लिए यह भूमिका स्वाभाविक रूप से स्वीकार कर उसे उत्साह के साथ वेब निभा रहा है। मास मीडिया, वेब और समाज के सह-संबंधों के बारे में हम प्रायः यहीं तक सीमित रहते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि मीडिया स्वयं अपना एक स्वरूप एवं एक शक्तिशाली चरित्र विकसित कर चुका है। समाज पर मीडिया का बहुआयामी प्रभाव है।

प्रिंट मीडिया और वेब संस्कृति सामाजिक प्रणाली का एक अहम् हिस्सा बन चुका है। सामाजिक होने के नाते वेब विभिन्न माध्यमों से समाज की सेवा करता है। प्रिंट मीडिया द्वारा समाज की सेवा एक ऐसा ही सशक्त माध्यम है। इस वेब द्वारा जनता को जागरूक किया जा सकता है। इस संदर्भ में मुकुल श्रीवास्तव कहते हैं कि ''प्रिंट मीडिया का कोई विकल्प नहीं है।'' मास मीडिया की वास्तविक शुरुआत भारत में प्रिंट मीडिया से ही हुई। इसकी व्यापक एवं प्रभावी भूमिका वेब के कारण ही इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है। इन दिनों सूचना प्रौद्योगिकी की वजह से पत्राकारिता जगत में कोई परिवर्तन आए हैं।

उपग्रह संचार से अखबारों का स्वरूप बदल रहा है। मद्रास में इनसेट-बी वेब सहयोग से तैयार किया गया द हिंदू सामाचार - पत्र गुड़गांव से प्रकाशित हो रहा है। उपग्रह मुद्रण तेजी से लोकप्रिय होता जा रहा है। उपग्रहों वेब माध्यम से एक ही वेब पत्र के कई संस्करण विभिन्न नगरों से एक साथ प्रकाशित हो पा रहे हैं। और अब वह दिन दूर नहीं है जब समाचारपत्रों का मुद्रण किसी एक केन्द्र पर न होकर अनेक वेब केन्द्रों से किया जा सकेगा। समाचार पत्र हमें केवल हमारे देश की विभिन्न समस्याओं और विचारों से ही रु-ब-रु नहीं कराते बल्कि विश्वभर की घटनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत करने का दायित्व भी निभाते हैं। समाचार पत्रों वेब की भूमिका के बारे में डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू कहते हैं कि वेब समय के इस कालचक्र में इतिहास बनते, बिगड़ते देखना तुम भूल जाओ, यह संभव नहीं, इन दिनों समय, काल, इतिहास वेब रूप में तुम्हारी आंखों के सामने है। मनुष्य जीवन की संपूर्ण झांकी को समाचार पत्र अपने हृदय में समेट लेता है। यह सत्य-असत्य, सृजन एवं विनाश, उत्थान-पतन आदि स्थितियों को अपने वास्तविक रूप में हम तक पहुंचाता है। जात-पात, भेदभाव, ऊंच-नीच आदि सामाजिक बुराईयों के खिलाफ संघर्ष छेड़कर समाज को बुराइयों से मुक्त करता है।

प्रेमनाथ चतुर्वेदी लिखते हैं कि वे तथ्य ही समाचार हैं जो पाठकों के जीवन के सुख-दुख, भावना और विचारों पर प्रभाव डालते हैं। ऐसी घटनाएं और तथ्य ही समाचारपत्रों में रहते हैं। सामाजिक सरोकार के कारण ही पत्रकार को जनता की आंख और कान कहा जाता है।

मीडिया समाज में होने वाले परिवर्तनों की सूचना देता है और समाज का मनोरंजन भी करता है। पत्र-पत्रिकाओं में आने वाले हास्य रंग, कथाएं, कविताएं, खेल समाचार, फिल्म संबंधित खबरों आदि से समाज का मनोरंजन होता है।

भारत में टाइम्स ऑफ इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस, द हिंदू, हिंदुस्तान टाइम्स, एशियन एज, अमर उजाला, जनसत्ता, दै. भास्कर, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स, हिंदी मिलाफ, लोकमत समाचार जैसे समाचारपत्रों ने अपने सकारात्मक उद्देश्य 'वेब' बल पर मीडिया और समाज की अस्मिता और विश्वास को बनाए रखा है। पत्रकारिता का क्षेत्र वैचारिक और बुद्धिजीवी लोगों का क्षेत्र है इसलिए पत्रकारिता को संचार का सामाजिक विज्ञान और लोकसेवा का सशक्त माध्यम कहा जाता है। यह मानवाधिकारों की सुरक्षा करता है तथा मानवाधिकारों के प्रति आम जनता में जागरूकता पैदा करता है। वेब पत्रकारिता के बारे में एन.सी. पंत ने लिखा है कि पत्रकारिता का उद्देश्य संपूर्ण समाज में नवसंचार, सजीवता, जागरण, नवस्फूर्ति, सक्रियता, गतिमयता वेब संदेश का प्रचार और प्रसार करना है। पत्राकारिता एक रचनाशील विद्या एवं शस्त्र है। प्रिंट मीडिया एवं वेब पत्रकार समाज निर्माण के लिए जो त्याग करते हैं, उनसे समाज प्रभावित होता है। आज पूरे विश्व में प्रिंट मीडिया का जिस गति से विकास हो रहा है, यह भूमंडलीकरण का ही परिणाम है।

प्रिंट मीडिया वेब महत्व वेब बारे में प्रो. रमेश जैन लिखते हैं कि भारत में प्रिंट मीडिया अपने आप में एक जीवंत उद्योग है। इस क्षेत्र में समाज के सभी वर्गों को स्थान मिलता है। भूमंडलीकरण के दौर में प्रिंट मीडिया एवं वेब पत्रकारिता के व्यावसायिक नजरिये में बदलाव आने लगा है इसलिए लोकतंत्र का यह चौथा स्तंभ यानी मास मीडिया अपनी वॉच डॉग की भूमिका पूरी ईमानदारी से नहीं निभा पा रहा है।

आज मानव समाज के सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर इंटरनेट तकनीक ने अपना प्रभुत्व सिद्ध किया है। संप्रति सर्वत्र कम्प्यूटर का वर्चस्व है। उद्योग, शिक्षा, यातायात नियंत्रण, चिकित्सा सुविधा, चुनाव संबंधी भविष्य वाणियाँ, मौसम संबंधी सूचनाएं और कानून व्यवस्था को अधिक कारगर बनाने में कम्प्यूटर सर्वाधिक सक्षम है। मास मीडिया में अभूतपूर्व क्रांति लाने में इसकी अहम भूमिका है। इस वेब माध्यम से मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं।

सामाजिक परिवर्तन में तथा समाज के विकास में वेब एक उत्कृष्ट माध्यम साबित हुआ है।

- विशाल तिवारी

सपनों के जुगनू

आँखों के गलियारे में टिमटिमाते
अनगिनत सपनों के जुगनू,
खुली पलकों से फिसल न जाये,
दिल के कोने में बंद कर लिए।
फिर भी समय की धारा के साथ,
कुछ बह गए, कुछ रह गए
आशा-भंवर में फंसने के बाद .....

जो बह गए उन्हें बहने दिया
अपरिचित आकाश के नीचे
अनजान लहरों में भटकने को
जहाँ न कोई पतवार थी
न कोई किनारा था
परन्तु डुबोने वाले हजार थे।
जो निश्छल थे, निर्मोही थे,
जैसे थे वो सपने थे
फिर भी मेरे अपने थे....

जो पीछे रह गए वो
संभल कर उड़ना सीख गए।
मौसमी हवा के वेग में
दिशा बदलना सीख गए।
रात के स्याह आवरण में जड़े
झिलमिलाते सितारों की तरह,
जीवन की उधड़ी राहों को
दिव्यता से अलंकृत कर गए....

और छोड़ गए एक एहसास
अनसुनी झंकार के साथ
एहसास एक लक्ष्य का,
पूर्ति सम्भावना का,
अनवरत संघर्ष का,
संतुष्टिपूर्ण भावना का .....

- शिवाली चौधरी

लख चौरासी

ऐसा भाव कहां से आया
जित देखा तुझे ही पाया
यही मान बिन्दु अखण्ड रहें
नित नव दर्शन तेरे होवे।
फिर नित मस्ती ऐसी पाऊँ
भावों में ही भावित रह कर

छोटा बड़ा किसे न पाऊँ।
प्रथम ध्यान चरणों में जावें
चरणरज कण मस्तक पर पाऊँ
इससे ही आशीर्वाद मिलेगा
कोई कभी जान न पायेगा।
शरीर तो मिलते मिटते

पर तेरा अंश अखण्ड रहता
इधर उधर राह घूमा करता
पर लख चौरासी से पार लगाता।

- चिरंजी लाल शर्मा
पूर्व तकनीकी सहायक

मान का त्याग करने से सर्व के माननीय बनने का भाग्य प्राप्त होता है।

पृष्ठ 1 का शेष...

महामना पंडित मदन मोहन ...

अपनी मृत्यु से दस दिन पूर्व उन्होंने अपने परिवार जन से यह बात कही थी कि मृत्यु के समय मुझे काशी मत ले जाना मैं अभी मुक्ति नहीं चाहता हूँ मैं एक और जन्म लेकर मानव सेवा करना चाहता हूँ। इस तरह की कही हुयी बात साधारण नहीं होती बल्कि पूरे जीवन के मर्म को एक सूत्र में प्रकट करती है।

पं. मालवीय जी जब तक जिये उन्होंने मनसा, वाचा, कर्मणा जनता की सेवा की। (वे अत्यंत सरल व सुलभ थे) और अंत में यही आकांक्षा लेकर वह इस लोक से गये कि यदि उनके कर्म उन्हें फिर से इस लोक में ला सकें तो वह अपने सेवाव्रत को एक जन्म और आगे ले चलें।

मालवीय जी विश्वात्मा पुरुष थे उनके हृदय में सम्प्रदाय का भेदभाव नहीं था। ''सबहिं सुलभ, सब दिन, सब देशा'', यह उक्ति उन पर पूर्णतः सत्य उतरती थी।

भारतीय हिन्दू संस्कृति उच्चतम मानवीय संस्कृति है, इस कारण इसकी सुरक्षा होनी चाहिये, यह भाव श्री मालवीय जी के मन में अत्यंत सुदृढ था इसलिये उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की। उनकी यह इच्छा थी कि इस विश्वविद्यालय से भारतीय हिन्दू संस्कृति के हर एक पहलू की उत्तम सुरक्षा हो जाये। महामना जी की दृष्टि में भारतीय लोगों को आदर्श मानव बनाने का हिंदू विश्वविद्यालय एक श्रेष्ठ साधन था, इसकी सिद्धि के लिये उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया।

प्रस्तुत हैं पंडित मालवीय जी के जीवन व उनके व्यवहार से जुड़ी कुछ यादें जो मैंने पढ़कर अनुभव की है, उनमें से कुछ वाकयों को आपके लिये लिखकर अपने अंतःकरण को पवित्र करना मात्र मेरा उद्देश्य है।

महापुरुषों के चरित्र की वास्तविक अभिव्यक्ति तो उनके नित्य के साधारण व्यवहार से होती है। आवेश में सहसा कोई दुष्कर कर्म कर कोई यश का भागी भले हो जाय, उससे उसके चरित्र की सच्ची परख नहीं होती। परन्तु महापुरुषों की सभी बातें निराली होती हैं। ''कहिबो सुनिबो बोलिबो चतुरन को कछु और।'' महापुरुषों के नैतिक धरातल का पता तो छोटी-छोटी घटनाओं से स्पष्ट होता है।

महामना जी को श्रद्धालु जन मूर्तिमान् साक्षात् सनातन धर्म मानते थे। श्रीमद्भागवत उनके नित्य पाठ की पुस्तक थी और उसी से उनको आजीवन प्रेरणा मिलती रही। वे उसके अन्न्य प्रेमी थे। उन्होंने भुजा उठाकर दशाश्वमेध घाट पर गंगा माई के सामने घोषणा की थी कि शास्त्र-विरुद्ध किसी सुधार का कभी अनुमोदन नहीं करेंगे। परन्तु शास्त्र इतने उदार हैं कि देश-काल की बदलती अवस्था में भी वे सच्चे मार्ग दर्शक हो सकते हैं। इसलिये उनका लाभ उठाना सबका कर्त्तव्य है।

1. न्याय और कोमलता

एक घटना से उनकी मनोवृत्ति का विशेष आभास मिलता है। डॉ. गणेश प्रसाद जो सेन्ट्रल हिन्दू कालेज के प्रधानाध्यापक बनाए गए थे, आते ही एक विरोधी दल के कोप भाजन बन गए। सर शिव स्वामी अय्यर, उप कुलपति, डॉक्टर गणेश प्रसाद को अविलंब निकाल देने पर जोर दे रहे थे। महामना जी को यह अन्याय लगा और उन्होंने इन्कार कर दिया, इस पर अय्यर महाशय ने त्यागपत्र दे दिया और तुरंत काशी से चले गए। उनके त्याग पत्र का उत्तर महामना जी ने कई बार तैयार किया और बराबर संशोधन करते रहे। उन्होंने अपने आशुलिपिक को भी सलाह देने और संतुलित भाषा के लिए ध्यान रखने को कहा, उत्तर तो कड़ा उचित था परन्तु उन्होंने उसको बेहद मुलायम कर दिया। दूसरे के हृदय को ठेस न पहुँचे, भले ही न्यायोचित बात को दबाना पड़े यही उनका लक्ष्य था। ऐसी कोमलता बिरले पुरुष ही दिखा सकते हैं। वे दोनों पत्र गोपनीय थे और वैसे ही रहे।

2. प्राण जाये पर वचन न जाये

एक दिन मालवीय जी भोजनान्तर विश्राम कर रहे थे कि उनके एक मित्र वहाँ पहुंचे। उन दिनों मालवीय जी सेवा-उपवन में बाबू शिव प्रसाद गुप्त के पास रहते थे। वह प्रणाम करके बैठे तो मालवीय जी ने कहा कि सर की उपाधि के लिए सरकार ने रुख देखा है 'नाइटहुड' के लिए क्या कहते हो?

मित्र ने उत्तर दिया - महाराज मुझे तो आपके लिये महामना पंडित ही अच्छा लगता है।

अगर आपको सम्मान हित डॉक्टर की उपाधि कोई विश्वविद्यालय दे तो अवश्य ही स्वीकार करियेगा पर 'नाइट हुड' नहीं। इस पर मालवीय जी बोले डॉक्टर की

पं. मदन मोहन मालवीय जी के साथ जवाहर लाल नेहरू

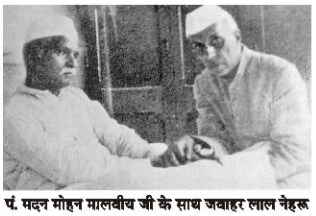

पदवी तो कभी न लूंगा। मैंने पिताजी को वचन दिया था संस्कृत में एम.ए. पास करने का, उसे पूरा न कर सका। इसलिये अब कोई उपाधि न लूंगा और हुआ भी ऐसा ही। सर आशुतोष मुखर्जी ने जब डॉक्टर की उपाधि लेने कलकत्ते के लिये निमंत्रण दिया तो मालवीय जी ने उत्तर तक न दिया और मुखर्जी महाशय को बहुत अप्रसन्न कर दिया।

और सरकार की विकृत बुद्धि का तमाशा देखिए कि डॉक्टर इकबाल ''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'' गीत के बोल लिखने वाले 'सर' की उपाधि भी पाये और फिर इकबाल पाकिस्तान के प्रबल समर्थक हो गए।

इसी तरह कचहरी में देवनागरी अक्षरों का प्रवेश कराने में मालवीय जी ने प्रमुख भाग लिया था। इससे कुछ मुसलमान चिढ़ गये थे। उनके विरोध करने पर भी न्यायोचित मांग पूरी की गई थी। मालवीय जी उर्दू के विरोधी न थे केवल देवनागरी के लिए अदालतों में प्रवेश चाहते थे। यदि उर्दू विरोधी होते तो क्या स्वयं ही अपने पुत्र गोविन्द मालवीय को उर्दू सिखाते जब नैनी जेल में पिता-पुत्र साथ-साथ बंदी थे। वह अपने पुत्र से कहा करते थे कि अच्छी हिन्दी लिखने वाले को थोड़ी संस्कृत, थोड़ी उर्दू जानना भी आवश्यक है।''

3. पत्थर की तरह कठोर तो फूल की तरह कोमल भी

''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि। लोकोत्तराणा चैतांसि को विज्ञातुमर्हति।।'' इस भवभूति के वाक्य का तो मालवीय जी महाराज जीते जागते उदाहरण थे।

एक दिन रात्रि के १ बजे छात्रावास में घूमने आये। छात्रावास के निरीक्षक भी उनके साथ ही थे। एक कमरे में एक संस्कृत का छात्र दमचूल्हा में दूध गरम कर रहा था। देखकर मालवीयजी ने कहा यह काम अनुचित है, इससे गन्दगी बढ़ती है। इस पर पाँच रूपये दण्ड विधान करो। उस दण्ड का खण्डन कौन करे? निरीक्षक महोदय ने कहा ठीक है। छात्रावास का निरीक्षण कर मालवीय जी अपने बङ्गले पर गये निरीक्षक महोदय भी साथ गये। वहाँ जाने पर मालवीय जी ने पाँच रूपये उन्हें दिये और कहा कि उस छात्र का दण्ड तुम अपने नाम से जमा करा देना ताकि उसको संकोच हो और वह इस अपराध की पुनरावृत्ति न करे।

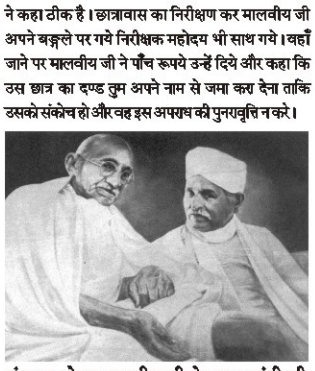

पं मदन मोहन मालवीय जी के साथ गांधी जी

4. ईश्वर में असीम विश्वास का असर : विश्वास करने वाले पर निहाल होते हैं भगवान

पं महामना जी की ईश्वर में प्रगाढ़ विश्वास तथा श्रद्धा थी तथा वह कभी भी हताश होना जानते ही नहीं थे। एक दिन ११ बजे दिन में एक मित्र सेवा उपवन में उनके पास आये वहाँ तेल मर्दन हो रहा था। यह उनका दैनिक कार्यक्रम था। मित्र ने कहा आज कुछ चिन्ता जान पड़ती है। मालवीय जी ने हंस कर कहा १००००० एक लाख रूपया आज ही चाहिए। इंजिनियरिंग कॉलेज के अध्यक्ष किङ्ग साहब की माँग है। मित्र फिर बोले रूपये की क्या कमी है? महाराज आप देना नहीं चाहते होंगे। यदि देना चाहे तो एक लाख क्या पांच लाख का इंतजाम कर सकते हैं। तब मालवीय जी ने कहा देना आवश्यक है और देना चाहता भी हूँ। इतने में तत्कालीन प्रोवाइसचांसलर आचार्य ध्रुव जी आये और एक तार महाराजा पटियाला का भेजा हुआ मालवीय जी को दिया जिसमें लिखा था कि पांच लाख रूपया इंजिनियरिंग कॉलेज को दिया जाता है। तार पढ़ कर मालवीय जी का कण्ठ भर आया और आंखों में आंसू आ गये और बोले मेरे लिये भगवान् को यह कष्ट करना पड़ा यह कहते हुये वह तार किङ्ग साहब के पास भेज दिया।

इन कतिपय संस्मरणों से महामना के हृदय की एक झलक दिखाई देगी ऐसी आशा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी, महामना मदन मोहन मालवीयजी के बारे में लिखते हैं - **देश सेवा करना ही मालवीय जी का भोजन है। वे इसे कभी नहीं छोड़ सकते। देशसेवा उनके जीवन में श्वास की तरह ओतप्रोत है।**

स्व. डॉ. पट्टाभि सीतारामैय्या जी भी लिखते हैं ''मालवीय जी अपनी वृद्धावस्था में भी देशसेवा करने के लिये सदा युवकों की तरह सजग और सन्नद्ध रहते थे।''

(अगले अंक में मालवीय जी के व्यक्तित्व से पाठकगणों को अवगत कराने का प्रयास किया जायेगा)

- डॉ. ज्योति जोशी

(सहायक आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग)

सन्त की सीख

एक महिला पूजा-कर्मकाण्ड इत्यादि तो बहुत करती, पर उसका स्वभाव अत्यंत कटु और द्वेषपूर्ण था। अपने घर वालों से वह सदा लड़ती, पति को ताने देती और बच्चों को डरा धमकाकर रखती। एक दिन उसके गाँव में एक संत का आगमन हुआ। उसने उनसे पूछा-'महाराज! मैं भगवान की इतनी पूजा करती हूँ, पर भगवान ने कभी मुझे सपने में भी दर्शन नहीं दिए, इसका क्या कारण है?' संत ने ध्यान लगाया और फिर बोले - 'बेटी, भगवान कहते हैं कि सपने में क्या वो तो प्रत्यक्ष में तेरे सामने कभी तेरे बच्चे बनकर कभी पड़ोसी बनकर, कभी पति बनकर आए, पर तूने ही हमेशा उन्हें अपमानित करके दूर भाग दिया'। महिला को बड़ा पश्चाताप हुआ। इसके बाद उसका व्यवहार सदा के लिए सुधर गया।

संकलित रचना : किरण राठौड़

मौन की आवाज़

मैं देखती हूँ उस चिड़िया को
आसमान में उड़ान भरते, बिना हिचक बिना डर चहचहाते
अपनी मर्जी की मालिक वो खुद
हिचकोले भरती कभी इस छज्जे कभी उस छज्जे
ना किसी रिश्ते का बंधन, ना दिल में लिए फिरती कोई उलझन
जलन होती है मुझे इससे, सोचा करती हूँ कि काश मेरी भी किस्मत
आजादी के रंग सी खिलती, देखने लगती हूँ में भी सपने
कब गले लगेंगे मुझसे मेरे अपने, यह दर्द जो मुझे मिल रहा
मेरी आत्मा को झिंझोड़ रहा, छलनी छलनी होती मेरी सहनशक्ति
दिन रात करती हूँ परमात्मा से विनती, ऐसी कैद किसी दुश्मन को भी ना मिले
इतना जुल्म कभी कोई ना सहे, डर लगता है अपनी चुप्पी तोड़ने से
इस समाज के नीम से भी कड़वे ताने सुनने से
इस राक्षस ने खून किया मेरे विश्वास का
अपमान किया पति पत्नी के पवित्र रिश्ते का
फांसी के फंदे से झूलते हुए मेरे सपनों को मैं देखती हूँ
अन्दर ही अन्दर अपने ग़मों को आँसूओं से धोती हूँ
अपने दरवाजे की चौखट को लांघने की सोचती हूँ
जुबां पर लगे ताले की चाबी को मैं ढूँढती हूँ
शरीर के जख्म आज नहीं तो कल भर ही जाएंगे
पर दिल पर लगी चोट के निशां समय के साथ और गहराएंगे।

- पायल चौहान, द्वितीय वर्ष सूचना अभियान्त्रिकी

सफलता का रहस्य

प्रातः स्मरणीय महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय के अथक प्रयास से बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई। चिकित्सा, अभियाँत्रिकी, मानविकी आदि विषयों के पाठ्यक्रम की स्नातकोत्तर शिक्षा एक ही प्रांगण में सुचारु रूप से भारतीय संस्कृति के अनुरूप देशप्रेम से प्रेरित भारतीय शिक्षा विशेषज्ञों द्वारा विद्यार्थियों को सुलभ होने लगी।

सम्पूर्ण भारत और विदेशों में बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में शिक्षा के उच्च स्तर की प्रशंसा सुन एक विदेशी पत्रकार मालवीय जी का इन्टरव्यू लेने आ पहुंचा। मितभाषी मालवयी जी ने विश्वविद्यालय की 'परिचय पुस्तिका' उस पत्रकार को अवलोकनार्थ दे दी। विदेशी पत्रकार द्वारा विश्वविद्यालय परिसर को देखने की इच्छा प्रकट करने पर मालवीय जी ने अपने सहायक से प्रोफेसर साहब को बुला लाने को कहा। सहायक ने लौट कर बताया कि प्रोफेसर साहब नहीं आये। मालवीय जी ने कहा, ''कोई बात नहीं'' सहायक प्रोफेसर साहब को बुला लाएं। सहायक ने लौटकर बताया कि वे भी नहीं आये हैं। मालवीय जी बोले, ''कोई बात नहीं'' सम्पदा अधिकारी महोदय को बुला लायें। सहायक ने लौटकर बताया कि रविवार की छुट्टी होने के कारण वे भी नहीं आये हैं। मालवीय जी बोल, ''कोई बात नहीं, आप चाबियां ले आएं।'' सहायक ने लौटकर कहा कि चाबियों को सम्पदा अधिकारी महोदय अपने साथ ले गये हैं। मालवीय जी ने कहा ''कोई बात नहीं। इन विदेशी मेहमान को बाहर से ही घुमा कर विश्वविद्यालय परिसर का अवलोकन करा दिया जाए।''

विदेशी पत्रकार ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि मैंने एक भिक्षुक संत, मदनमोहन मालवीय द्वारा चन्दे से स्थापित विश्वविद्यालय का अवलोकन किया और बहुत प्रभावित हुआ। मैंने पाया कि मालवीय जी की सफलता का रहस्य ''कोई बात नहीं'' वाली मनोवृत्ति में है।

- रमेश चन्द्र कौशिक

शिक्षित समाज का आईना

माँ से बातें करते करते कब सूरज पर से फिसलकर सामने आ गया था, पता भी नहीं चला। माँ का मन था कि मैं सुबह जाऊँ, फिर भी अनिच्छापूर्वक माँ से गाँव के बस स्टैंड पर पैर छूकर विदा होना पड़ा। जीप से चौमूं पहुंचने के बाद मुझे पुनः चौमूं से जयपुर जाने वाली राजस्थान रोडवेज में चढ़ना पड़ा। मेरे पीछे पीछे एक सम्पन्न शहरी से दिखने वाले परिवार के आठ सदस्य भी इसी बस में चढ़ गए। उनमें एक मोटी सी परिवार की प्रधान महिला थी जिसके चेहरे पर किसी न किसी बात का दंभ साफ देखा जा सकता था। उसके साथ दो तीस पैतीस की उम्र के बेटे, एक बहु, तीन की सी उम्र के बच्चे और एक युवती थी जो बोलचाल से बड़े बेटे की साली जान पड़ रही थी।

जिस सीट पर मैं बैठा उसी के पास खिड़की वाली पर एक एक पैंसठ साल का देहाती बुजुर्ग व्यक्ति पहले से बैठा बीडी के कस ले रहा था। हमारे आगे पीछे की सीटों पर वे लोग भी आकर बैठा गए। हालांकि बीडी के उस धुंएं में से गुलाबों की सी खुशबू तो मुझे भी नहीं आ रही थी, फिर भी बीडी का कस लेने के बाद उस बुजुर्ग को धुंआ खिड़की से बाहर देख छोड़ते देख मेरे मन में उसकी बीडी के प्रति भी सहानुभूति हो गयी थी। तभी अचानक जोर से वह आंटी जो कि उस बुजुर्ग व्यक्ति के एकदम सामने वाली सीट पर बैठी थी तेज कर्कश आवाज में बोली।

ओ रे बाबा इस बीडी को फैंक नहीं तो नीचे उतर।

उसके बोलते ही उस व्यक्ति के हाथ से बीडी छूटकर बाहर रोड पर गिर गयी, अब वह अपने मुंह में भरे बीडी के धुंए को खिड़की से बाहर छोड़ने के लिए गर्दन बाहर कर ही रहा था कि तभी उसके पीछे वाली सीट पर अपनी बीवी और साली के बीच बैठा आंटी का बड़ा बेटा उस व्यक्ति की पीठ थपथपाते हुए जोर से बोला।

क्यों बे बुढढे गंवार ही है क्या जब किसी को दिक्कत हो रही है तो बस में बीडी पीना जरूरी ही है, तुझे पता है यह जुर्म है, अभी शिकायत करूँ तो वो तेरे बाप जेल में चक्की पिसवायेंगे बाहर फेंक जल्दी।

कानून की भाषा और इंसानों की दिक्कतों को समझने वाले, बाबी से बढ़कर साली को प्रेम से सीने से लगाने वाले, अपने उन बच्चों को रोज सुबह उठकर मॉम डैड के पैर छूने की शिक्षा देने वाले उस महान दम्भी प्रेमी पर गुस्सा तो उसे भी बहुत आया। मैं उसे बोलने ही वाला था कि भैया आपका ध्यान किधर है नजर किधर है आपकी इन्होंने बीडी कब की फेंक दी है। पर मेरे बोलने से पहले ही अपमान की चोट खाया वह बुजुर्ग तिलमिलाकर बोला-

मैं जेल में चक्की पीसूंगा तो भी कौनसी तेरी माँ मेरे घर बच्चों को रोटी देने आने वाली है कि तू इतना ऊफान खा रहा है।

उस व्यक्ति की बात ने मछी बाजार बनी बस को एक क्षण के लिए एकदम शांत कर दिया था। हर यात्री मुंह और आँखे फाडे उसके अगले धावे की प्रतीक्षा में ही था कि तभी उस आंटी का वह होनहार बेटा अपनी बाहें चढ़ाते हुए।

उठ ! खड़ा हो तू नीचे उतर पता है किससे बात कर रहा है तू अभी तेरी बीडी की गर्मी उतरता हूँ एक तो साला बस में नशा करके चढ़ता है और ऊपर से मुझे ही गाली दे रहा है। बोलते हुए खड़े होते हुए उस व्यक्ति के कमीज की कॉलर पकड़ने के लिए उस पर भूखे भेडिये की तरह झपटता है और इस झपट्टे के साथ ही वृद्ध व्यक्ति के सर से पगड़ी उतरकर उस आंटी के बगल में बैठी उसकी दस साल की पोती की गोद में जा गिरती है, गिरते ही वह आटी नाक चढ़ाती हुई उस पगडी के साथ से टक्री मारती है जिससे पगड़ी दोनों तरफ की सीटों के बीच आने जाने की गैलरी में बॉल की तरह घूमती हुई उधड़ती हुई बस के आगे वाले गेट तक पहुँच जाती है।

अब वह वृद्ध व्यक्ति एक बार उस आंटी के बेटे के धक्के का जवाब गाली से दे रहा था, तो दूसरी बार अपनी बिछी हुई पगड़ी पर से उस बहादुर शेर के पंजों को अपने कांपते हाथों से हटाने की नाकाम कोशिश कर रहा था। उसका वह संस्कारी बेटा अपनी साली के होठों की लाली को देखकर अपनी आंखें लाल किये जा रहा था, वह आंटी अपनी तिरछी नजरों एवं घमंडी फीकी मुस्कान से अपने बेटे को विजयी भव का आशीर्वाद दिए जा रही थी, एक बार ऊँगली का इशारा करते हुए अपनी दस साल की पोती को तो एक बार खूनी होठों से चूमते हुए अपने जिगर के टुकड़े छः महीने के पोते को बहादुरी का यह पाठ अच्छी तरह रटाये जा रही थी।

व्यवस्थित बंधी आधी पगड़ी को सर पर एवं खुली बिखरी आधी पगड़ी को अपने दोनों हाथों से सीने से लगाये वह वृद्ध व्यक्ति जैसे ही बस से नीचे उतरने के लिए अपना पैर उठा रहा था तभी पीछे से किसी का हल्का सा धक्का पाकर वह पेड़ से टूटे सूखे पत्ते की भाँति लहराकर सड़क पर जा गिरा, साथ ही उसकी छलक रही आँखों से बेबसी और अपमान का कड़वा जहर आंसू बनकर टपकने लगा था। बस में बैठे सभी यात्री खिडकियों में से झांककर बगुले की तरह गर्दन घुमा घुमा कर उस तमासे को देख रहे थे ओर वह अपने आप को संभालता हुआ सहानुभूति की आशा में तर आँखों से हम सब को देख रहा था। वह दृश्य मेरी सहनशक्ति की सीमा लांघ चुका था मेरा मन मुझे धिक्कार रहा था ऐसा लग रहा था। जैसे मुझे जगाने के लिए सीने पर कोई हथोड़े मार रहा हो, मेरी मुठ्ठियां बंद होती जा रही थी, आँखों की पुतलियाँ फैलती जा रही थी, दांत किट किट करने लगे थे। मैं जैसे ही उस बहादुर नौजवान की बांह पकड़कर बस से नीचे खींचकर लाया तो देखा ड्राइवर ने बस चला दी। वह मुझे बुजुर्ग व्यक्ति की तरफ धकेलते हुए अब तू सर पे बैठा ले इस नशेड़ी को बोलते हुए बस में जा चढ़ा।

वह बुजुर्ग व्यक्ति अपनी पगड़ी सँभालने में व्यस्त हो गया, वहाँ इकट्ठे हो रखे लोग, लड़ो मत, लड़ों मत, बस में नशा करके चढ़ने वालों का तो यही हाल होता है। औरतों को गाली बकेगा तो यही होगा, अरे जवानी का जोश है उसके जो बेचारे को बस से नीचे पटक गया, आदि बातें करते हुए एक एक कर खिसकने लगे थे। मैं उसकी पगड़ी ली थी, अब मैं एक बार हाथ में लिए उस 96 रूपये के टिकट को देख रहा था, तो एक बार उस बुजुर्ग की आँखों में देखकर उस साधारण सी लगने वाली को घटना को द्रौपदी के चीरहरण से तुलना कर रहा था।

– गणपत यादव

भाव कुभाव

कहाँ से आया क्या लाया,
इस का तनिक नहीं पता
तू ही जानें तू ही बताये
कैसा भाव जगायेगा
तेरा होकर ही रहूं
इधर-उधर कभी नां भटकूं
मुख में तेरा नाम रहे
आठों पहर जाप चले।
साथ रहोगे यह तो सच्च है
ऐसा ही नित भान रहे
ऐसा कर्म कभी नां होवे
जिस से किसी को ठेस लगे।
जग में लाया कुछ करने को
सात्विक भाव ही रखना
तू जो चाहे वह ही होवे
भाव-कुभाव कभी नां होवे।

– चिरंजी लाल शर्मा
(पूर्व तकनीकी सहायक)

महिला सशक्तिकरण में परिवार की भूमिका

स्वामी विवेकानन्द ने उचित ही कहा है- ''स्त्रियों की दशा में सुधार न होने तक विश्व का कल्याण उसी प्रकार असम्भव है जिस प्रकार पक्षी का एक पंख से उड़ना''

सृष्टि के विकास क्रम में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। नारी मानव जीवन की जन्मदात्री है वह वात्सल्य, भावना, ममता, स्नेह, संवेदना, प्यार, दया, करुणा, क्षमा, सौन्दर्य, त्याग व समर्पण का पर्याय है।

हमारे देश में महिलाएं देश की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा हैं। इसलिए राष्ट्र के विकास के इस महान कार्य में महिलाओं की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्र निर्माण के कार्य को समझा जा सकता है।

यहाँ प्रश्न उठता है कि महिला सशक्तिकरण का अर्थ क्या है? क्या यह मात्र अपने शाब्दिक अर्थ 'महिला की सबलता' तक ही सीमित है अथवा इसके निहितार्थ कहीं अधिक गहरे है। वस्तुतः इस प्रश्न की परख इस बात से की जानी चाहिए कि नारी भयमुक्त होकर, सम्मान खोए बगैर, जिस लक्ष्य को पाना चाहती है, उसके लिए प्रयास कर सकती है या नहीं। यही सबलता और सुयोग्यता महिला सशक्ति की असली पहचान है।

वास्तव में 'महिला सशक्तिकरण' ने केवल भारत बल्कि विश्वभर में राजनीति के साथ-साथ सामाजिक व प्रशासनिक मुद्दा भी बना हुआ है। जिसका सूत्रपात संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च, 1975 को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाने की शुरुआत से हुआ। भारत में सन् 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत 'महिला बाल विकास विभाग' तथा 1992 में 'राष्ट्रीय महिला आयोग' का गठन किया गया। सन् 2001 में महिला राष्ट्रीय नीति भी बनाई गई तथा सन 2005 में संसद द्वारा घरेलू हिंसा अधिनियम भी पारित किया गया। महिला बाल कल्याण के दर्जनों कार्यक्रम समय-समय पर प्रारम्भ किये जाते रहे हैं।

महिला सशक्तिकरण को भूर्तरूप देने हेतु जरुरी है कि महिलाओं के वर्तमान सामाजिक, शैक्षणिक, मनोवैज्ञानिक आदि पक्षों को दृष्टिगत रखते हुए उनकी समस्याओं, कठिनाईयों और उपेक्षाओं का वास्तविक धरातल पर निरीक्षण व नीति निर्धारण किया जाये उन्हें उत्साहवर्धक पारिवारिक, सामाजिक व प्रशासनिक वातावरण सुलभ कराया जाएं, तभी महिलाये अपने अधिकारों का लाभ उठा सकेगी।

महिलाओं हेतु मात्र कानून या नये अधिकारों की स्थापना से सशक्तता नहीं दी जा सकती है बल्कि इसके लिए परिवारों में ही महिलाओं के प्रति संकुचित दृष्टिकोण को व्यापक, उदार व व्यावहारिक बनाने पर बल दिया जाना चाहिए। समानता पर आधारित पारिवारिक व सुव्यवस्थित सामाजिक प्रणाली विकसित करनी होगी जिसमें महिलाएं भेदभाव रहित व उत्साहवर्धक वातावरण पाकर अपनी निहित क्षमता का उपयोग करके वास्तविकता में सशक्त बने। महिला को सशक्त बनाने की शुरुआत हमें अपने परिवारों से करनी होगी। घर परिवार से जब लिंग आधारित भेदभाव मिटेगा तभी महिला सक्षम होगी और सम्मान प्राप्त करेगी। लड़के और लड़की में शारीरिक भेद के अलावा जितने भी भेद है वे परिवार के बनाए हुए है। उन्हें परिवार ही समाप्त कर सकता है। परिवार लड़की के साथ कोख से कब्र तक भेद करता है। वह लड़की व लड़के के सामाजिकरण में भी भेद करता है। उस भेद को हम संस्कारों के कारण न्यायोचित ठहराते है। उसी का परिणाम है कि उसी घर से एक अलग तरह का पुरुष जन्म लेता है जो अपने आप को श्रेष्ठ मानता है और उसी घर से एक ऐसी लड़की जन्म लेती है जो अपने आपको दोयम दर्जे को स्वाभाविक रूप से स्वीकार कर लेती है। घरों से निकले हुए ये पुरुष जब राजनीतिज्ञ, प्रशासक, पुलिस, न्यायाधीश, शिक्षक या अन्य पद ग्रहण करते है तो उनमें स्त्री को दोयम दर्जे में रखने की मानसिकता बन चुकी होती है। परिवारों में हम नैतिकता के दोहरेपन को निरन्तर प्रक्षय देते है और औरत को चरित्र के आधार पर देखने की मानसिकता वाले परिवार में पुरुष के चरित्र पर बात नहीं की जाती है, यही दोहरापन पूरे कानून में नजर आता है। इसी कारण बड़े से बड़ा कानून और संविधान भी औरत को ताकतवर नहीं बना पाता है।

हमें हमारे परिवार व समाज में सकारात्मक वातारवण और सोच विकसित करनी होगी जिसमें बेटियां व तदात्वर महिलाएं पुष्टिपत, पल्लवित, फलित व शोभित हों, तभी हमारे समाज की सार्थकता है।

– डॉ. पद्मा पण्डेल

प्रायश्चित

अब सावधान रहना, मैं कहकर ईंगित न करना।
मैं तो हर पल अखण्ड रहता, यह कभी क्षीण नहीं होता।
इस सत्य को पहले जानलें, फिर आगे की राह चुन लें।
मैं तो एकाधिकार है, जिसके पीछे गूढ़ ज्ञान है।
जो कभी न मरता-न माराजाता, न गलता न जलाया जाता।
वह तो ज्यों का त्यों रहता, इधर उधर विचरा करता।
अब शरीर में कैसे होवे, यह तो मरता और जलाया जाता।
गलता और मारा जाता, अब मैं शरीर अखण्ड कहाँ रहा।
मैं कह कर क्रिया करते, सभी पाप पुण्य स्वयं भुगतते।
दोष ओरों को ही देते पर प्रायाश्चित कभी न करते।

– श्री सी.एल. शर्मा

आत्मा व शरीर

आत्मा ने नया शरीर धारण किया, प्राणों का संचार होते ही मन की उछल-कूद आरम्भ हुई। उसने शरीर के कान भरने शुरू किए, कहा कि ये आत्मा कुछ करती-धरती नहीं। बस, एक जगह बैठकर अपने आप को परमात्मा का अंश बताती है। सारी रौनक तो हम दोनों की वजह से है और श्रेय ये ले जाती है। शरीर को मन की बात जँची। उसने आत्मा से कहा-'मैं और मन मिलकर काम करेंगे। मैं सुंदर बनूंगा, धनवान बूनंगा और शक्तिशाली बनूँगा।' आत्मा बोली-'मित्र हमारा अस्तित्व अलग-अलग नहीं है। बाहर की सुंदरता जितनी आवश्यक है, उससे कहीं ज्यादा जरूरी आत्मिक विकास है।' मन ने बीच में अड़ंगा लगाया और कहा- आत्मा जी, आप चुप ही बैठें, जो दिखाई पड़ता है, वही सच माना जाता है और जो नहीं दीखता, वो किसी मतलब का नहीं होता। आत्मा ने मौन धारण करना ही उचित समझा। आयु बढ़ी, उसके साथ शरीर बूढ़ा होना प्रारम्भ हो गया। बाह्य आकर्षण ढलने लगा और कुरूपता छलकने लगी। आत्मा शरीर से बोली-बंधु! यदि तुमने पहले मेरे कथन पर ध्यान दिया होता और आंतरिक उत्थान में समय, श्रम लगाया होता तो आज अपने आप को इतना थका-हारा अनुभव न करते। शरीर के पास अपनी गलती पर पछताने के अतिरिक्त और कोई उपाय न था।

संकलनकर्ता- नरेन्द्र तिवारी

बेटी

मान-सम्मान... और अभिमान है बेटियां...
दया धर्म ... और जीवन का मकसद भी है बेटियां...
दिल के प्रीत वाले कोने में है बेटियां,
सूखते प्रीत-सागर को फिर से भरने वाली भी है बेटियां ...
माँ-बहन है बेटियां,
अपनी जान-जिंदगी-माया-खुशबू-छायाँ भी तो है किसी की बेटियां...
हुक्का-पानी बंद करो उनका, जो बन रहे आज कंस है,
नीलाम कर दो उनकी सांसों को, जो सजा रहे इज्जत का बाजार है...
अब जोश न दिलाओ मुझे, नहीं गणपत से कृष्णा बन जाऊँगा मैं...
अब वादा करो मुझसे, नही रुलाओगे बेटी को,
वरना भरी दुपहरी बीच बाजार आऊँगा ले कटारी हाथ में,
या फिर ले बांसुरिया आऊँगा पूर्णिमा की आधी रात में ...
दुआ करो मेरे लिए जमाने वालों, मैं आपकी लाखों बेटियों का बेटा बनूं...
दुआ यह भी करो, उससे भी ज्यादा उनका प्यारा भैया बनूं....

– गणपत यादव (कृष्णा)

समय की कमी नहीं होती है कमी रूचि और संकल्प की होती है।

मच्चितः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि। अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।। (श्रीमद्भगवतगीता 18.58)

यदि तुम मुझसे भावनाभावित होगे, तो मेरी कृपा से तुम बद्ध जीवन के सारे अवरोधों को लाँघ जाओगे।
लेकिन यदि तुम मिथ्या अहंकारवश ऐसी चेतना में कर्म नहीं करोगे और मेरी बात नहीं सुनोगे, तो तुम विनष्ट हो जाओगे।

हममें से प्रत्येक व्यक्ति सुख की खोज में है, किन्तु हम नहीं जानते कि सच्चा सुख क्या है। हम अपने चारों ओर सुख का विज्ञापन तो बहुत देखते हैं, किन्तु प्रत्यक्षतः सुखी लोग हम बहुत ही कम देखते हैं। इसका कारण यह है कि बहुत ही कम लोग यह जानते हैं कि सच्चे सुख की स्थिति नश्वर पदार्थों से परे है। यह वह सच्चा सुख है जिसका विवेचन भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को समझाया है।

सुख का अनुभव साधारणतया हमारी इन्द्रियों के माध्यम से होता है। उदाहरण के लिए, एक पत्थर के पास कोई इन्द्रियां नहीं है, अतः वह सुख या दुःख का अनुभव नहीं कर सकता। विकसित चेतना अविकसित चेतना की अपेक्षा सुख और दुःख का अनुभव अधिक गहराई से कर सकती है। वृक्षों में चेतना होती है, किन्तु वह विकसित नहीं होती है। वृक्ष सभी ऋतुओं में दीर्घकाल तक खड़े रह सकते हैं, पर उनके पास दुःखानुभव करने का कोई साधन नहीं है। यदि किसी मानव को वृक्ष के समान केवल तीन दिन या इससे भी कम समय तक खड़ा रखा जाये, तो वह यह सहन नहीं कर सकेगा। सारांश यह है कि प्रत्येक चेतन प्राणी सुख–दुःख का अनुभव अपनी चेतना के विकास के अनुसार ही करता है।

इस भौतिक संसार में हम जो सुख अनुभव कर रहे हैं, वह सच्चा सुख नहीं है। यदि कोई व्यक्ति किसी वृक्ष से पूछे, "क्या तुम सुखी हो?" तो वृक्ष, यदि बोल सकता, तो कदाचित् यही कहता, "हाँ, मैं यहाँ वर्षभर खड़े–खड़े सुखी हूँ। वायु और हिमपात का बहुत ही आनन्द ले रहा हूँ, आदि–आदि।" एक वृक्ष इस प्रकार की स्थिति में आनन्द अनुभव कर सकता है, परन्तु मानव के लिए आनंद के अनुभव का यह एक अत्यन्त निम्न स्तर है।

यदि कोई मानव सुख प्राप्त करना चाहता है, तो उसे बुद्धिमान होना आवश्यक है। पशुओं के पास वस्तुतः विकसित बुद्धि नहीं होती, इसलिए वे जीवन का ऐसा सुख नहीं ले सकते जैसा मानव ले सकते हैं। एक मृत व्यक्ति के भी हाथ, पैर, आँख, नाक आदि सब इन्द्रियां होती हैं, फिर भी वह आनन्द नहीं ले सकता। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सुखानुभव करने वाली चेतन शक्ति उस शरीर से लुप्त हो चुकी होती है और शरीर में कोई शक्ति नहीं बची होती है। यदि हम थोड़ा बुद्धिपूर्वक इस विषय पर और अधिक विचार करेंगे, तो पायेंगे कि जो वास्तव में सुख का अनुभव कर रहा था, वह शरीर नहीं था, अपितु उसके भीतर रहने वाली सूक्ष्म चेतना थी।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि आत्मा आनन्द का अनुभव कर रहा है, तो उसकी इन्द्रियाँ भी होनी चाहिए, अन्यथा वह आनन्द का अनुभव कर कैसे सकता है? वेद इसकी पुष्टि करते हैं कि यद्यपि आत्मा अणु के समान सूक्ष्म है, तथापि वही वास्तव में आनन्द का भोक्ता है। आत्मा को नापना–तोलना सम्भव नहीं है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि आत्मा का कोई परिमाण नहीं है। जो पदार्थ हमें एक बिन्दु से अधिक न लगे और जिसकी कोई लम्बाई चौड़ाई भी दिखाई न दे, उसे भी यदि हम अणुवीक्षण यंत्र से देखें तो उसमें हमें लम्बाई और चौड़ाई दोनों दिखाई देंगी। इसी प्रकार आत्मा का भी अपना परिमाण होता है, पर हम उसका अनुभव नहीं कर सकते। जब हम कोई वस्त्र खरीदते हैं, तो उसे शरीर के अनुरूप बनाया जाता है। आध्यात्मिक चेतना का भी आकार होना चाहिए, अन्यथा यह कैसे हुआ कि उसे धारण करने के लिए भौतिक शरीर का विकास हुआ?निष्कर्ष यह है कि दिव्य आत्मा निर्विशेष नहीं है। यह यथार्थ में एक व्यक्ति है। ईश्वर एक वास्तविक पुरुष हैं और उनका सूक्ष्म अंश होने के कारण आत्मा भी एक व्यक्तित्व है। यदि पिता में निजी स्वरूप और विशिष्टता है, तो पुत्र में भी ये अवश्य होंगे और यदि पुत्र में ये हैं, तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि पिता में भी ये होंगे। अतः यह कैसे हो सकता है कि भगवान् की सन्तान होकर हम अपने स्वरूप और विशिष्टता को तो स्थापित करें और अपने परम पिता भगवान् में उनको नकारें?

भारत में एक कथा है कि एक व्यक्ति को यह भी नहीं पता था कि गन्ना क्या होता है। उसे केवल इतना बताया गया था कि गन्ना चूसने में बहुत मीठा होता है। उस व्यक्ति ने पूछा, "अरे, गन्ना देखने में कैसा होता है?" तो किसी ने कहा "गन्ना देखने में बाँस के डण्डे के समान होता है।" बस यह सुना ही था कि वह मूर्ख आदमी हर प्रकार के बाँस के डण्डों को चूसने लगा परन्तु इससे उसे गन्ने की मिठास का अनुभव कैसे हो सकता था?इसी प्रकार हम भी सुख और आनन्द प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं, पर हम मूर्खतापूर्वक इस भौतिक शरीर को चूस कर उन्हें प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, परन्तु वह वास्तविक सुख नहीं है क्योंकि वह अस्थायी है। वह आतिशबाजी की तरह दिखाई दे सकता है, परन्तु वास्तविक बिजली तो इससे परे है चूँकि साधारण मानव यह नहीं जानता कि सच्चा सुख क्या है, इसलिए वह सच्चे सुख से विचलित हो जाता है।

अपने आप को वास्तविक आनन्द में स्थापित करने की प्रक्रिया यह कृष्णभावनामृत की प्रक्रिया है। कृष्णभावनामृत द्वारा हम शनैः शनैः अपनी वास्तविक बुद्धि का विकास करते हैं और जैसे जैसे हम आध्यात्मिक उन्नति करते हैं, वैसे ही अध्यात्मिक आनन्द का अनुभव सहज रूप से करने लगते हैं। जैसे जैसे हमें इस आध्यात्मिक आनन्द का आस्वाद आने लगता है, वैसे ही हम भौतिक आनंद से उसी अनुपात में विरक्त होने लगते हैं। जब हम परम सत्य को समझने में प्रगति करते हैं, तो स्वाभाविक रूप से ही हम इस प्रकार झूठे सुख से विरक्त होने लगते हैं।

श्रीमद्भागवत में इस भौतिक जगत की तुलना एक महासागर से की गई है। इस भौतिक ब्रह्माण्ड के अंतरिक्ष में लाखों–करोड़ों ग्रह–नक्षत्र तैर रहे हैं और हम यह कल्पना कर सकते हैं कि इसमें कितने अन्ध(एटलांटिक) और प्रशान्त महासागर होंगे। वास्तव में यह सारा भौतिक ब्रह्माण्ड जन्म, मृत्यु, और दुःखों के एक महासागर की तरह ही है। इस अज्ञान के महासागर को पार करने के लिए एक सुदृढ़ नौका की आवश्यकता है और वह सुदृढ़ नौका है – श्रीकृष्ण के चरणकमल। हमें इस नौका पर तुरन्त आरूढ़ हो जाना चाहिए। हमें यह सोचकर संकोच नहीं करना चाहिए कि श्रीकृष्ण के चरण तो बहुत छोटे हैं। वास्तव में समस्त ब्रह्माण्ड उनके चरणों पर ही टिका हुआ है। कहा जाता है कि श्रीकृष्ण के चरणकमलों में शरणागत मनुष्य के लिए यह भौतिक ब्रह्माण्ड, गाय के बछड़े के खुर–चिह्न में भरे जल से अधिक नहीं रहता। ऐसे छोटे से गो–खुर को पार करना निश्चित रूप से कठिन नहीं है।

मन सदा अस्थिर रहता है; यह कभी इधर जाता है, तो कभी उधर। योगाभ्यास से हम मन को यथार्थ रूप में कृष्णभावनामृत की ओर खींचते हैं। किन्तु मन कृष्णभावनामृत से अनेक बाह्य विषयों की ओर दौड़ता है, क्योंकि अनादि काल से और जन्म–जन्मांतर से इसकी यही प्रवृत्ति रही है। फलतः साधक को प्रारम्भ में अपने मन को कृष्णभावनामृत की ओर उन्मुख करने में बड़ी कठिनाई हो सकती है, पर इन सभी कठिनाइयों पर विजय पाई जा सकती।

क्योंकि मन अशान्त है और श्रीकृष्ण की ओर उन्मुख नहीं है, अतः यह एक विचार से दूसरे विचार में चला जाता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी काम में लगे होते हैं, तो मन में अचानक ऐसी घटनाओं की स्मृति बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के जागृत हो उठती है जो दस, बीस, तीस या चालीस वर्ष पहले घटित हुई थीं। ये विचार हमारे उपचेतन मन से ही आते हैं और क्योंकि ये विचार निरन्तर उठते रहते हैं, इसलिए मन सदा अशान्त रहता है। यदि किसी झील या तालाब के पानी को हिलायें, तो उसके तल से सारी मिट्टी ऊपर आ जायेगी। इसी प्रकार जब मन अशान्त होता है, तो उपचेतन मन से अनेक विचार उठ खड़े होते हैं, जो उसमें वर्षों से संचित हुए रहते हैं। यदि हम तालाब को आन्दोलित न करें, तो मिट्टी तल में बैठ जाएगी। योग की यह प्रक्रिया मन को शांत करके इन सभी विचारों को स्थिर करने के लिए है। इसलिए मन को उद्विग्न और अशान्त होने से रोकने के लिए अनेक यम–नियम हैं। यदि इनका पालन किया जाये तो मन शनैः शनै वश में आ जाएगा। यदि कोई वास्तव में मन को वश में करना चाहता है, तो उसे अनेक प्रकार के विधि–निषेधों का पालन करना होगा। कोई यदि केवल स्वेच्छा से कार्य करे, तो मन को संयमित करने की क्या सम्भावना रहेगी?जब मन अन्ततः उस बिन्दु तक प्रशिक्षित कर लिया जाता है, जहाँ वह श्रीकृष्ण के अतिरिक्त किसी और विषय का चिंतन नहीं करता, तब वह निश्चल हो जाएगा और उसे शांति प्राप्त हो जाएगी।

मनुष्य का मन निरन्तर सुख के पदार्थों के लिए योजना बनाता रहता है। वह सदा यही सोचता रहता है, "मुझे यह सुखी बना देगा" या "वह सुखी बना देगा।" सुख यहाँ है, सुख वहाँ है।" इस प्रकार मन हमें यहाँ वहाँ भटकाता रहता है। यह अनियन्त्रित घोड़े से युक्त रथ पर आरूढ़ होने जैसा ही है। हमारा इस बात पर कोई नियंत्रण नहीं होता कि हम कहाँ जा रहे हैं। हम तो बस भयभीत हुए बैठे ही रह सकते हैं और निस्सहाय हो कर देखते ही रह सकते हैं। किन्तु ज्योंही मन कृष्णभावनामृत की प्रक्रिया में लग जाता है–विशेष रूप से 'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे। हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे' के कीर्तन द्वारा, त्योंही मन के अनियंत्रित घोड़े हमारे वश में आ जाएँगे। हमें अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को कृष्ण की सेवा में लगा देना चाहिए, जिससे यह उद्विग्न और अशान्त मन हमें व्यर्थ ही इस नाशवान् भौतिक जगत में सुख की खोज में एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ की ओर खींच न ले जाये।

मच्चितः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।।
(श्रीमद्भगवद्गीता 18.58)

यदि तुम मुझसे भावनाभावित होगे, तो मेरी कृपा से तुम बद्ध जीवन के सारे अवरोधों को लाँघ जाओगे। लेकिन यदि तुम मिथ्या अहंकारवश ऐसी चेतना में कर्म नहीं करोगे और मेरी बात नहीं सुनोगे, तो तुम विनष्ट हो जाओगे।

- गौरमंडल दास

सवाल हमारे जवाब उसके

सवाल : प्रार्थना क्या है?

जवाब : प्रार्थना अगर शुद्धतम हो तो पर्याप्त ही नहीं, वरन प्रयाप्त से भी ज्यादा है। परमात्मा रूपांतरित नहीं करता है बल्कि प्रार्थना रूपांतरित करती है, वह अलग बात है कि ऐसा होता प्रभु की कृपा से ही है। परमात्मा, प्रेम का गहनतम अनुभव है, प्रार्थना जब गहरी हो जाती है तब परमात्मा प्रकट होता है।

दूसरी बात प्रार्थना और प्रेम उधार नहीं हो सकते, हमारे पूर्वजों ने जो प्रेम किया इसे हम महसूस नहीं कर पाते तथा इससे हम प्रेमी भी नहीं बन सकते। हमारे देश में कितने ही संत क्यों न हुये हों, इससे हम भक्त नहीं बन सकते, प्रेम व भक्ति दानों में ही किसी और से कोई सरोकार नहीं है, हमारे हृदय के अंतरतम से पुकार उठेगी तो वह प्रार्थना होगी एवं प्रेम बनकर हमें रूपांतरित करेगी।

तीसरी बात, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा जहाँ जाना हो, हम जायें पर प्रार्थना स्वयं की करें। शब्द नहीं मिले हमें कोई बात नहीं परमात्मा को कहाँ कभी शब्दों से मतलब है, उन्हें तो बस शुद्ध प्रेम की पुकार सुनाई देती है, वह चाहे मौन के द्वारा हो, आंसूओं के द्वारा हो, मदमस्त नाच के द्वारा हो, या फिर स्वर लहरियों के द्वारा हो। कहने का तात्पर्य है कि प्रार्थनायें हृदय की भाषा हैं व्याकरण नहीं। प्रार्थना यानि परमात्मा से एक गुप्तगू, जिसमें भाषा कैसी भी हो चलेगा, उन्हें गरज सिर्फ तुम्हारे भाव से है, प्रार्थना में प्रभु परीक्षा लेते हैं उस भाव की, अहसास की जो तुम्हारे भीतर उस वक्त है न कि उन शब्दों की जो तुमने कंठस्थ कर रखे हैं। प्रार्थना हमारे अंदर से उठनी चाहिये उस वक्त जब कि हम पुकार रहे हों प्रभु को, और उसकी कोई पूर्व तैयारी नहीं हो सकती है।

प्रार्थना हम नहीं करते हैं, वास्तव में तो परमात्मा ही हमारे द्वारा करता है और परमात्मा ही हमारा द्वारा उस भक्ति भाव को लेता है, हम तो केवल बांसुरी बन जाते हैं, उन्हें एक रास्ता दे देते है उस वक्त। हम कोई अवरोध न दें उन्हें इतना ही हमारा काम होता है प्रार्थना के दौरान। परमात्मा ही गाता है अपने गीत और वहीं सुनता है, वही प्रतिमा है, वही पुजारी, वही गायक है वही श्रोता, क्योंकि हम उसके हैं और हमारा वह सब जिसे हम अपना कहते हैं, भी उसी का है।

हमें परमात्मा के चरणों में ध्यान लगाने से पहले एक और प्रार्थना करनी होगी उनसे, उन्हें जानने के लिये। फिर हम दूसरी प्रार्थना करेंगे, निरंतर उनके नाम जप से, उन्हें स्मरण करके और वहीं पायेंगे प्रभु प्रसाद के रूप में उनके चरणों के दर्शन। इस तरह हम जहाँ ध्यान लगायेंगे वही जगह मंदिर बन जायेगी।

तो परमात्मा से पहले हमें प्रार्थना करनी है उन्हें जानने की पात्रता प्राप्त करने की, फिर उनसे प्रार्थना करनी है उस आशीर्वाद के प्राप्ति की, जिससे हम उन्हीं के हो जायें और सदैव उनके प्रति समर्पित रहें। एक बात और कहनी है कि हमें परमात्मा को पाने का उद्देश्य नहीं रखना है बल्कि उनका हो जाना है। उनसे प्रेम करने की जरूरत है, उनसे कुछ लेने या मांगने की नहीं।

इसलिये हमें जरूरत इस बात को जानने की नही होनी चाहिये कि परमात्मा है या नहीं? आवश्यकता हमें प्रार्थना की होनी चाहिये। प्रार्थना अगर आस्था और प्रेममय होगी तो परमात्मा मिल ही जायेंगे, तब हम समझेंगे कि प्रेम ही प्रमाण है परमात्मा का। प्रेम जो सबके भीतर है, आवश्यकता है उसे प्रार्थना के जरिये परमात्मा को देने की, क्योंकि वह ही हमारी श्वासों की श्वास है।

- डॉ. ज्योति जोशी

तलाश

मोहब्बत की निशानी ढूँढता हूँ।
मैं सहराओं में पानी ढूँढता हूँ।

नगर में, गाँव में, बस्ती में, घर में,
जहाँ हूँ, जिंदगानी ढूँढता हूँ।

जो पत्थर-काट कर रास्ता बना ले
दिलों में वो रवानी ढूँढता हूँ।

कहाँ ढलती हैं शब्दों में कल्पनायें
अगर अनुवाद करने बैठता हूँ

पहुँचती है दिलों से जो दिलों तक
वही बोली पुरानी ढूँढता हूँ।

- संकलित

जब इंसान की नीयत साफ होती है तब ही वह साधुवाद की तरफ बढ़ता है।

बाईबिल का संदेश :

आपका उपहार : वास्तविक स्वतन्त्रता

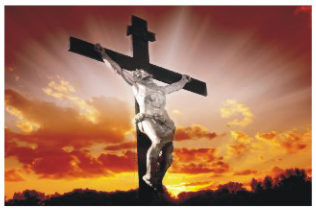

स्वतन्त्रता प्रत्येक मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसलिए संसार में सब लोग अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे हैं।

1. विश्व व्यापी बन्धन

जो व्यक्तिगत स्वतन्त्रता चाहते हैं वे प्रभु यीशु के वचन सुनें। यहुदी जिन्हें यह घमंड था कि वे कभी गुलाम नहीं रहे है, उन्हें यीशु ने यह बताया "मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ, वह जो पाप करता है पाप का दास है।"

प्रभु यीशु उन्हें पाप की भयंकर आत्मिक बीमारी का स्मरण दिला रहे थे और इस बन्धन से छुटकारा पाने की आवश्यकता बता रहे थे। मनुष्य उसी समय वास्तविक स्वतन्त्रता का आनन्द उठा सकता है जब उसने पाप से छुटकारा पाया है। पाप का बन्धन मनुष्य पर इतना कठोर है कि वे उसे छोड़ नहीं सकते। जिस बुराई से वे घृणा करते हैं उसे ही वे करते हैं और जिस भलाई को वे करना चाहते हैं, उसे नहीं कर पाते।

2. छुटकारे के लिए प्रयत्न

सब जगह लोग पाप और उसकी शक्ति से छुटकारा पाने के लिए लगातार संघर्ष करते हैं। उनके प्रयत्न धार्मिक कार्य, शारीरिक कष्ट, दान दक्षिणा, तीर्थ यात्रा और अच्छे कार्य करना है परन्तु यह प्रयत्न पाप और उसकी शक्ति से उन्हें छुडा नहीं सकते। उसके विपरीत इन प्रयत्नों को करके लोग और अधिक असहाय और पाप के शिकार हो जाते हैं।

मनुष्य के दुःख और समस्याओं का मूल कारण पाप है। मनुष्य का परमेश्वर की योजनाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करने से इन्कार करने के कारण पाप का प्रारम्भ हुआ।

पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर दिया परन्तु परमेश्वर जो दया और प्रेम से परिपूर्ण है इस पृथ्वी पर प्रभु यीशु के रूप में आये मनुष्य को ढूंढ कर उसे परमेश्वर के पास लौटा चले, 'क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, उसका नाश न हो तथापि वह अनन्त जीवन पाए।' जैसे कि एक तोड़ा गया फूल सूख कर मुरझा जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी सूख कर मुरझा गया है क्योंकि उसका सम्बन्ध परमेश्वर से टूट गया है। परमेश्वर की जीवन धारा मनुष्य में रुक गयी। मनुष्य बिना उद्देश्य और बिना शांति कारण भटकने लगा।

जिस दिन से मनुष्य परमेश्वर से दूर हुआ उसके अन्दर उसने एवं खालीपन महसूस किया, जिसे वह भर न सका। अपनी आत्मा की प्यास बुझाने के लिए, संसार में जो कुछ प्राप्त हो सकता था उसने ढूंढा धन, मनोरंजन, सुख-सुविधाएं, पद, ख्याति आदि। इनसे भी उसकी प्यास न बुझ सकी। फलस्वरूप मनुष्य के हृदय का दर्द बढ़ता ही गया।

परमेश्वर ने पाप में मनुष्य की स्थिति देखी जो शैतान के अधीन जीवन व्यतीत कर रहा था और पाप का बोझ उठाए हुए था। परमेश्वर इस पापी संसार में मनुष्य को ढूंढने और आश्रय देने आये। प्रभु यीशु परमेश्वर का 'वचन मनुष्य' बना, जिसने अद्भूत रीति से एक कुंआरी से जन्म लिया। वह ईश्वर-मानव प्रभु यीशु संसार के उद्धारकर्त्ता है।

प्रभु यीशु इस संसार में आये कि सब का उद्धार हो। वह मानव के पाप दूर करने और पाप द्वारा बिगडे हुए संबंध को सुधारने आये। इस समझौते के कारण वह परमेश्वर का मेम्ना कहलाये जो जगत के पाप उठा ले जाता है। मानव पर अदृश्य परमेश्वर को प्रगट करने के लिए प्रभु यीशु मानव शरीर लेकर उत्पन्न हुये। उन्होंने इस संसार में अन्य मनुष्यों की तरफ जीवन व्यतीत किया। यीशु जो मनुष्य के समान जीवित रहे, मानव के अनुभव सहे- जैसे भूख, प्यास और शारीरिक दर्द। जब यीशु ने स्त्री और पुरुषों को पाप के बोझ तले दुःख उठाते देखा, वह दया से भर गये। प्रेम से उन्होंने उन्हें बुलाया और कहा 'हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें आश्रय दूंगा। उन्होंने उन पर सहानुभूति प्रकट की जो पाप और शैतान से दबे हुए थे, जो दुष्टात्मा और रोग से ग्रसित थे।' उन्होंने पश्चाताप करने वालों के पाप क्षमा किए।

3. सत्यमार्ग और जीवन

वे जो अंधेरे में टटोलते और आत्मिक अंधकार में चलते यह न जानते हुए की कहाँ जा रहे है उनसे 'यीशु ने कहा, सत्य मार्ग और जीवन मैं हूं - मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आता।' जो भय और मृत्यु की शक्ति के अधीन रहते है उनसे उन्होंने कहा पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ... जो मुझ पर विश्वास करे यदि वह मर भी जाए तो भी अमर रहेगा। हाँ, प्रभु यीशु मनुष्य जाति के पापों के लिए प्रायश्चित करने और पापों को दूर करने के लिए स्वयं को बलिदान करने आये।

बाइबल कहती है, 'प्रभु यीशु में उसके लहू के द्वारा पापों की क्षमा है' पापी मनुष्य कभी अपने आप को बचा नहीं सका। बाइबल कहती है, सबने पाप किया परमेश्वर के अपरिवर्तनशील वचन (पाप की मजदूरी मृत्यु है। जो पाप करता है निश्चय मरेगा।), द्वारा मनुष्य का न्याय हुआ और वह अनन्त मृत्यु का भागी हुआ। परन्तु यीशु ने स्वयं मनुष्य जाति के पाप और उसके दण्ड उठाए। वह उनके स्थान पर मरो ताकि कि उन्हें अनन्त मृत्यु से छुडाऐं और अनन्त जीवन देकर उन्हें धर्मी ठहराऐं।

यीशु ने संसार में आने का उद्देश्य बताया, ईश्वर का पुत्र संसार में इसलिए आया कि अनेक लोगों के लिए अपना प्राण दे और उनकी सेवा करे।

बाइबल कहती है, इसलिए कि मसीह ने भी अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मों ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए नए शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। जब यीशु ने अपने पर मनुष्य के पाप उठाए वह पाप बने वह जो पाप से अनजान थे। हमारे लिए पाप बने कि ताकि हम उससे परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। मानव को पाप से बचाने का अन्य कोई उपाय न था। इसलिए परमेश्वर ने अपनी अनन्त योजना में इस मार्ग को ठहराया।

प्रभु यीशु जो पाप बने, मानव के लिए लकड़ी के क्रॉस पर तीन कीलों से लटके रहे।

क्रूस पर अत्यधिक पीडा को सहते हुए यीशु ने प्रार्थना की, पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने अपना प्रेम हमारे प्रति इस प्रकार प्रकट किया कि प्रभु यीशु हम अधर्मियों के लिए मरे यह जानते हुये भी कि हम पापी थे।

परमेश्वर की अपरिवर्तनशील आज्ञा के अनुसार बिना लहू बहाए पापों की क्षमा सभंव नहीं। पापहित उद्धार कर्त्ता ने संसार के पाप धोने के लिए अपना लहू बहाया। यीशु का लहू आप को और मुझे पाप और शैतान की शक्ति से स्वतंत्र करने और अनन्त जीवन के वारिस बनाने के लिए बहा।

4. जी उठा प्रभु

प्रभु यीशु कलवरी क्रॉस पर मरे परन्तु तीसरे दिन फिर जीवित होकर मृत्यु और शैतान को हराया उसके पुनरुत्थान द्वारा समस्त मानव जाति पाप मुक्त हो गई। विश्वास करके यदि आप यीशु पर विश्वास करें जो आपके स्थान पर जो पाप और मृत्यु को हराने और दूर करने के लिए फिर से जी उठे, तो आप आपके पापों से क्षमा पाएंगे। परमेश्वर आप को एक धर्मी व्यक्ति घोषित करेगा। इसके साथ अनन्त जीवन देगा जो अनन्त मृत्यु से छुटकारा है। यह वरदान, जो आप परमेश्वर प्रभु यीशु पर विश्वास करके मुफ्त प्राप्त करते हैं, त्राण कहलाता है।

5. सार्वभौमिक उद्धार

सार्वभौमिक उद्धार जो प्रभु यीशु ने मनुष्य जाति के लिए तैयार किया है, किसी भी व्यक्ति के लिए बिना मूल्य उपलब्ध है जो परमेश्वर की शर्तें पूरी करता है। ये शर्तें पाप से पश्चाताप करना और फिर पाप को छोड़ देना है तथा प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर से क्षमा प्राप्त कर उसे उद्धार कर्ता प्रभु ग्रहण करना है।

बाइबल कहती है, अब जो प्रभु यीशु में है उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। बाइबल यह कहती है कि प्रभु यीशु के द्वारा ही मनुष्य पाप की शक्ति और दण्ड से तथा शैतान के अधिकार से बच सकता है।

प्रभु यीशु किसी को भी जो उसके पास विश्वास से आता है और अपने पापों के लिए पश्चाताप करता है, ग्रहण करने को तैयार है। प्रभु यीशु आपके पाप क्षमा करेगा और आपको अनन्त जीवन देगा। यीशु ने प्रतिज्ञा की, जो मेरे पास आयेगा उसे मैं कभी नहीं निकालूँगा।

यीशु उन्हें वास्तविक स्वतन्त्रता देता है जो उसके पास आते हैं चाहे वे किसी भी जाति, धर्म और रंग के हों। यह स्वतन्त्रता का आनन्द हमारे लिए है जो उस उद्धार से प्राप्त होता है जो प्रभु यीशु हमें देता हैं। बाइबल कहती है, यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और सब अधर्म से शुद्ध करने में सच्चा और धर्मी हैं। उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पाप से शुद्ध करता हैं।

यदि आप पाप और अधर्म के द्वारा दबे हुए है और आपको आश्चर्य हो कि कैसे यीशु के पास पहुंचे तब विश्वास का कदम उठाइए। कहें प्रभु यीशु मैं आ रहा हूँ, कृपया मुझे ग्रहण करें।

अपनी सब समस्याएं और जीवन के कष्ट उनके पास लाइए। पाप का हल उसमें प्राप्त कीजिए। यीशु आपको बचाने के लिए योग्य और तैयार है। शैतान के बन्धन से छूटने का अभी समय है। वास्तविक स्वतन्त्रता का अभी भी समय है। यही है परमेश्वर का सबसे विशेष उपहार आपके लिए। यह उपहार है- उद्धार या परमेश्वर का प्रेम।

-डॉ. शुजा जॉर्ज

लोक आयुक्त : भ्रष्टाचार निराकरण की एक प्रभावशाली प्रणाली

वर्तमान युग में भ्रष्टाचार शासन के प्रत्येक क्षेत्र में इस स्तर तक फैलता जा रहा है कि आम आदमी की समझ में यह एक समस्या न रहकर आम बात के रूप में स्वीकार होता जा रहा है। ऐसे सामाजिक परिवेश में शासकीय तंत्र भ्रष्टाचार के फलने फूलने का सबसे उपयोगी क्षेत्र साबित हो रहा है।

आम आदमी की शासन के क्रिया कलापों से उत्पन्न होने वाली शिकायतों के निराकरण करते हुये भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने की किसी भी प्रजातांत्रिक प्रणाली वाले देशों के लिये 'लोक आयुक्त' प्रशासन एक अत्यंत सरल, प्रभावी एवं उपयुक्त संस्था है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि भ्रष्टाचार से पीड़ित प्रदेशवासियों को लोक आयुक्त प्रशासन के बारे में प्रभावी ढंग से जानकारी देने के साथ-साथ ये मानसिकता भी उत्पन्न की जाये कि प्रदेशवासी विश्वास के साथ अपनी शिकायतों को लोक आयुक्त कार्यालय में प्रस्तुत करें तथा आगे की कार्यवाही में अपेक्षानुसार सहयोग प्रदान करते हुये पूर्ण योगदान दें। यह एक ऐसा प्राधिकरण है जिसकी भूमिका शासन द्वारा किये जाने वाले अनुचित कार्यों को चिह्नित करते हुये उनके सुधार एवं रोकथाम के लिये आवश्यक सुझावों के माध्यम से शासन के समक्ष प्रस्तुत करके उन्हें लागू कराये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करता है।

भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों में लोक आयुक्त एवं उपलोक आयुक्त अधिनियम लोक शिकायतों के निराकरण की व्यवस्था लागू है। लोक आयुक्त अधिनियम के अंतर्गत प्रदेश के लोक सेवकों, जिसमें मंत्रीगण तथा विधान मण्डल के सदस्य भी सम्मिलित है, के विरूद्ध शिकायतों की जाँच की जाती है और इसी उद्देश्य से इस संगठन की स्थापना भी हुयी है। संक्षिप्त रूप में यदि हम इसके इतिहास में जाना चाहें तो लोक आयुक्त का पद 'ओमबुड्समैन' प्रणाली जो विश्व के कई देशों में प्रचलित है के आधार पर भारत में शुरू हुयी। महाराष्ट्र पहला राज्य था जिसमें सन् 1971 में इस व्यवस्था भी शुरुआत हुयी, इसके बाद कई राज्यों जैसे राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, बिहार में इसका गठन हुआ। आज देश के अधिकांश राज्यों में यह संगठन लोक सेवा के लिये उपलब्ध है।

लोक आयुक्त प्रशासन की कार्यप्रणाली अभी तक देश के राज्यों में सफल नहीं हो पाई है इसका मुख्य कारण है कि सामान्य जनता ही नहीं बल्कि सरकारी विभागों, निगमों, स्थानीय निकायों आदि को भी लोक आयुक्त के क्षेत्राधिकार, महत्ता, शक्तियों व कार्यप्रणाली के बारे में समुचित जानकारी नहीं है।

अतः लोक आयुक्त, प्रशासन से जुड़े लोगों के अलावा प्रत्येक जागरुक प्रदेशवासी का यह कर्त्तव्य है कि वह शासन के कार्यकलापों से पीड़ित व्यक्तियों को राहत प्रदान करने के लिये लोक आयुक्त प्रशासन से सम्पर्क करने हेतु प्रेरित करें।

शासकीय कार्यप्रणाली में सुधार लाये जाने हेतु केवल दोषी व्यक्ति को दंडित करना उतना प्रभावशाली परिणाम नहीं देगा, जितना कि यदि व्यवस्था में इस स्तर की सतर्कता सुनिश्चित कर ली जाये और इस आशय का पर्याप्त भय सदैव व्याप्त रहे कि दोषी पाये जाने पर दण्ड से बच पाना संभव नहीं हो सकेगा।

ऐसे विशिष्ट उत्तरदायित्व के निर्वहन में यदि हम पूर्ण दक्षता, तत्परता एवं मनोयोग से अपना योगदान दे तो समाज में लोगों को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने में काफी सफलता मिलेगी।

– अन्मेष कुमार श्रीवास्तव
शोध छात्र, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग,

फोटोग्राफी-भावाभिव्यक्ति का सरल एवं कलात्मक माध्यम

हर व्यक्ति में भावनाएं होती हैं और प्रत्येक व्यक्ति में एक कलाकार छुपा होता है। बस उसे व्यक्त करने के माध्यम अलग-अलग होते है, जैसे चित्रकारी, संगीत, नृत्य, अभिनय, खेल एवं फोटोग्राफी आदि के द्वारा व्यक्ति अपने अन्दर छुपी भावनाओं को व्यक्त करता है।

आज डिजिटलाइजेशन के युग में मोबाइल तक में कैमरा उपलब्ध होने के कारण फोटोग्राफी अपने भावों को व्यक्त करने का सबसे सरल, कलात्मक एवं असरकारक माध्यम के रूप में लोकप्रिय हो रहा है। प्रकृति कितनी खूबसूरत है, उसका एहसास हम नंगी आँखों से उतना नहीं कर पाते हैं जितना कैमरे की विशेष आंख से। इसी के द्वारा ही हम प्राकृतिक सौन्दर्य को महसूस कर उस पर विमुग्ध होते हैं। अतः फोटोग्राफी हमें प्रकृति के नजदीक ले जा कर उसके रहस्य समझाने एवं हमारे सौन्दर्य बोध को बढ़ाने में हमारी मदद करती है।

एक कलाकार की शक्ति उसकी बेहतर रचनात्मक-कल्पनाशीलता में निहित होती है और कैमरा उस रचनात्मक-कल्पनाशीलता को उभारने में हर कलाकार की बहुत बड़ी मदद करता है।

- महेश स्वामी
सलाहकार, फोटोग्राफी वास्तुकला एवं नियोजन विभाग

मौन के वृक्ष पर शांति के फल लगते हैं।

प्रकाशक एवं सम्पादक डॉ. ज्योति जोशी, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 9413971604, 0141-2713550
ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com • सदस्य, सम्पादक मंडल : डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. राजकुमार व्यास, डॉ. कैलाश सिंह, श्री सुशान्त उपाध्याय, श्री अंशु सक्सेना
छात्र सदस्य : मुकेश धीमानी (रसायन अभियांत्रिकी), दिव्यांशु गोयल (वैद्युत अभियांत्रिकी) • छायांकन : श्री महेश स्वामी
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द् प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016 • www.theprintpalaceindia.com